

शिर्डी से जब हॉवे विदाई

शिर्डी से जब हॉवे विदाई दिल करे बस इक ये ही दुहाई,
कदमो को मेरे बड़ने से तुम रोक लो साई रोक लो साई

कैसे सह्ये ये हिजर की वेला,
सुना लगता जग का मेला,
साँसे भी ये सेह न पाए.
कैसा है ये दर्द का खेला,
नैनो से बरसात है आई,
मन की पीड़ा है दुखदाई
कदमो को मेरे बड़ने से तुम रोक लो साई रोक लो साई

शिर्डी बस तीर्थ ही है मेरी तो याहा जान वसी है,
कैसे जाऊ छोड़ के आँचल माँ की टंडी छाव यही है,
दिल से ये आवाज है आई ,
बैठू कुछ पल द्वारका माई,
कदमो को मेरे बड़ने से तुम रोक लो साई रोक लो साई

पूछे मुझसे सारा जमाना है क्यों तू साई का दीवाना,
कैसे बताऊ इस दुनिया को सांसो में है साई का तराना,
मिटटी की खुशबु है आई,जिस में रमी मेरी परछाई,
कदमो को मेरे बड़ने से तुम रोक लो साई रोक लो साई

<https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/16195/title/shirdi-se-jab-howe-vidaai>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |